Copyright © 2018, Ajay Kumar Singh
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN-10: 1-5457-4255-3
ISBN-13: 978-1-5457-4255-6

Library of Congress Cataloging in Publication

Contents

भाग १	१
भाग २	३०
भाग ३	४६
भाग ४	६१
भाग ५	७९
भाग ६	९४
भाग ७	११५
भाग ८	१२७
भाग ९	१३१
भाग १०	१४४
भाग ११	१४८
भाग १२	१७४
भाग १३	१८१
भाग १४	१९३
भाग १५	२००
भाग १६	२०२
भाग १६	२२०
भाग १६	२४०
भाग १७	२५०
भाग १८	२८८
भाग २०	३२६
भाग २१	३३८
भाग २२	३४३

भाग २३	३४९
भाग २४	३८०
भाग २५	३८३
भाग २६	४११
भाग २७	४१९
भाग २८	४४३
भाग २९	४४९
भाग ३०	४५९
भाग ३१	४७१
भाग ३३	४९४
भाग ३४	५०१
भाग ३४	५२४

भाग

१

ट्रेन के प्लेटफार्म पर रूकते ही, अर्चना अपनी सहेलियों के साथ बोगी नं. एस–फोर मे घुसी और अपनी शीट खोलते–खोलते सुशान्त के पास पहुँची। सुशान्त विन्डो शीट पर बैठा, बाहर प्लेटफार्म पर लोगो को इधर–उधर भागते देख रहा था, जो ट्रेन पकडने के लिए अपनी शीट ढूँढते इधर–उधर भाग रहे थे।

– “हे मिस्टर चलो उठो यहाँ से”। खाली पडे बर्थ पर बैग रखते हुए अर्चना ने विन्डो से बाहर देख रहे सुशान्त को कहा। अर्चना की बातो का सुशान्त पर कोई असर ना हुआ वह इसकी बाते अनसुनी कर, प्लेटफार्म पर भागते लोगों को भीड को देखता रहा।

– बहरे हो क्या? कोई रिस्पांस मिलता ना देख अर्चना ने ऊँची आवाज मे कहा–कुछ सुनायी नही पडता चलो उठो यहाँ से।

सुशान्त की तन्द्रा भंग हुई उसने जब नजर उठा कर देखा, अर्चना की तरफ तो देखता रह गया। टाईट जीन्स शर्ट में उसके शरीर के अंग स्पर्ट दिखायी दे रहे थे। गुलाबी गाल, सूर्ख सी नशीली झील जैसी आँखें, सुनहरे लम्बे, कमर तक लटकते खुले बाल किसको भी मदहोश करने के लिए काफी थी। "चलो उठो"। अब तक दो–तीन बार अर्चना वह शब्द दोहरा चुकी थी लेकिन सुशान्त के कान पर जूँ तक ना रेगी थी। वह अपलक उसे देखता जा रहा था। "अरे बडे ढीठ हो"। कुछ असर ही नही पड रहा है तुम्हारे उपर, बस देखते ही जा रहे हो। कभी लडकी नही देखी क्या। नही तुम्हारी जैसी नही देखी सुशान्त म नही मन सोच अर्चना की खूबसूरती मे खोया रहा। अब तक अर्चना की सहेलियों भी अपनी शीट ढूँढते–ढूँढते वहाँ आ गयी थी। "क्या हुआ रे"। तू खडी क्यो है शीट नही मिली क्या?

– नही मिली तो लेकिन ये मेरी शीट पर बैठा है कब से उठने के लिए बोल रही हूँ उठ ही नही रहा है बस घूरे जा रहा है। जैसे कभी लडकी देखी ही ना हो।

– "हे भाई उठो" हाय की हथेली, सुशान्त की आँखों के सामने, हवामे उपर नीचे करते हुए दीपा ने कहा। अचानक आँखों के सामने दीया की हथेली आने से सुशान्त सजग हुआ।

– क्या हुआ आप लोग खडी क्यो है बैठिए।

– अरे तुम उठोगे तब ना बैठूंगी। कहाँ बैठूँ मेरी जगह पर तो आप बैठे हो।

– अरे नही वह जगह तो मेरी है। मै अपनी शीट पर बैठा हूँ आप से कोई गलत फहमी हो गयी है।

कोई गलत फहमी नही हुई है, यह शीट मेरी है।

– ऐसे कैसे आप की है मैने बकायदा टिकट ले रखी है।"

– कहाँ है टिकट दिखाओ"।

– यह लो देख लो। अपनी जेब से टिकट निकाल अर्चना की तरफ बढाते हुए सुशान्त ने कहा। टिकट हाथ में ले बिना देखे अर्चना ने उसे फाडकर फेंक दिया। सुशान्त की जान निकल गयी, टिकट फडता देख।

– "अरे यह क्या किया आप ने टिकट क्यों फाड दिया"।

– इसलिऐ कि वह शीट तुम्हारी नही मेरी है। अब चलो उठो यहाँ से नही तो धक्के मार कर भगाऊँगी।

– अब तो मै हरगिज ना यहाँ से उठूँगा। एक तो टिकट फाडकर फेंक दिया उपर से धमकी भी दे रही है। शीट ही चाहिए थी तो रिक्वेस्ट करती मै दे देता। टिकट फाडने की क्या जरुरत थी उपर से धमकी दे रही है। नही उठूँगा जो उखाडने का है उखाड ले जा।

– उखाडूँगी नही, उठाकर सीधा ट्रेन के नीचे फेंक दूँगी। अभी तुम मुझे जानते नही हो। हरियानी पहलवान हूँ मैं अपनी दोनो बॉहे बटोर, हाथ के मशल्स सुशान्त को दिखाते हुए अर्चना ने कहा।

तभी ट्रेन एक झटके के साथ आगे बढ़ी अर्चना सुशान्त के उपर गिरते–गिरते बची।

हाँ दिख रहा है। कितनी बडी पहलवान है तू। खुद तो सम्भला नही जा रहा है। चली है मुझे ट्रेन से नीचे फेकने। ये मशल्स हरियानी हो वा फिर राजस्थानी मै यहाँ से उठने वाला नही।

– "अच्छा"। लगता है तुम्हे सचमुच उठा कर फेंकना पडेगा। देखो मैं तुम्हे आखिरी बार समझ रही हूँ चुपचाप चले जाओ यहाँ से नही से तुझे ओर भी तरीके आते है, तुम्हे भगाने के।

– तू कोई भी तरीका अपना तो मै यहाँ से जानेवाला नही।

– सोच ले फिर बाद में मत कहना कि मैंने तुझे चेताना नही।

– सोच लिया, मैं यहाँ से जाने वाला नही हूँ। कहता हुआ सुशान्त विन्डो के बाहर देखने लगा। अब तक ट्रेन अपनी फुल स्पीड पकड चुकी थी। पटरी के दोनो तरफ, खेत खलिहान तेजी से पिछे टूटते जा रहे थे।

– क्या करुँ यार इसपर तो कुछ असर ही नही हो रहा है"।

– छोड ना आ इधर बैठ जा पूरी शीट तो खाली है।

– नही छोड सकती कैसे छोडूँ। अख्खा जिन्दगी मे आज तक मेरे साथ ऐसा कभी नही हुआ कि जो शीट मै चाहुँ वह मुझे ना मिले। आज तो मेरा सोलह साल का रिकार्ड टूटने वाला है क्या करुँ भगवान। अर्चना खडे–खडे मनही मन सोच सुशान्त कोसने लगी।

– हेलो भाई साहब आप, थोडा इधर सटक जाइये ना। इसे वहाँ विन्डो के पास बैठने दीजिए दो–चार घन्टे की ही तो बात है लखनऊ आते ही यह शीट छोड देंगे।

– मैडम हम यह शीट की नही है ठीक से बोलती तो मै इसे यह शीट दे देता यह तो आतेही धमकी देने लगी उपर से मेरा टिकट भी फाडकर फेकं दिया। अभी टी.टी. इसने फाडकर फेंक दिया। वह जबाब दूँगा कि मेरे पास टिकट था इसने फाडकर फेंक दिया। वह मेरी बातो पर विश्वास थोडी ना करेंगे, वह तो मुझे विना टिकट समझे।

– "भगवान करे टि.टी. जल्दी आये और तुम्हे विना टिकट यात्रा करने के जुलूम मे जेल में डाल दें"।

– तु चिन्ता मत कर, जेल मै तुझे साथ लेकर जाऊँगा। मै बैठे–बैठे गेहूँ पीसूँगा और तुम खडे–खडे रोटी सेकना, पूरी कैदियों के िए।

– "मैं क्यो जेल जाऊँगी, मेरे पास तो टिकट है"। मै नही जानेवाली जेल।

– अच्छा ठीक है, तब तक तो बैठ जा जबतक टी.टी. नही आता। दीपा ने अर्चना का हाथ पकड अपनी बगल बिठाना चाहा।

– नही, छोड मेरा हाथ, नही करुँगी। बैठूँगी तो उसी शीटपर। अर्चना नें अपना हाथ छुडाते हुए कहा–देखती हुँ कि कबतक यह यहाँ बैठता है देर–सबेर टी.टी. यहाँ जरुर आयेगा।

– फिर तो भूल जा, खडे–खडे लखनत्र आ जायेगा लेकिन टी.टी. नही आयेगा।

– "क्यों टी.टी. तुम्हारा बाप है जो नही आयेगा"।

– "बाप नही है सरकारी दामाद है"। उनका मन, पैसो की तंगी होगी ले आयेगा नही तो नही आयेगा।

– ऐसा कैसे नही आयेगा मै जाकर अभी बुला कर लाती हूँ। कहती हुई अर्चना वहाँ से जाने को हुई तभी दीपा ने उसे रोकते हुए कहा–

– अरे–अरे कहाँ जा रही है तू चलती ट्रेन मे कहाँ ढूँढती उसे रुक ना अभी वह आयेगा ही।

– नही मैं उसके आने का इन्तजार क्यो करुँ जा रही हूँ उसे ढूँढ कर लाऊँगी और इसे यहाँ से भगा कर ही दम लूँगी। सएक बार फिर सोच लो। चलते–चलते अर्चना ने सुशान्त

– सोच लिया, तू जा बुला कर ला, मै यहाँ से नही उठने वाला चाहे कोई भी आ जाये।

सुशान्त ने तैश मे कह तो दिया लेकिन अर्चना के वहाँ से जाने के बाद वह मन ही मन डरने लगा और सोचने लगा कि टी.टी. आयेगा तो क्या कहेगा, यही कि उसने उसका टिकट फाड कर फेंक दिया। नही माना तो फाइन भर कर वापिस टिकट लेनी पडेगी। फिर तो शीट भी जायेगी एक्सट्रा पैसे भरने पडेंगे सो अलग। अजीब लडकी है यार मेरी ही शीट मुझे ही धौंस दिखा रही है। लडके लोगो को तो शीट के लिए दादागिरी करते देखा था अब तो लडकियाँ भी दादागीरी करने लगी आज पहली बार देखा। जमाने का बलिहारी है नही तो सर उठाकर बात करने से भी डरती थी।

– क्या सोच रहे है फट रही है क्या? सामने की शीट पर बैठी दिपा ने मुस्कराते हुए सुशान्त से पूछा

– "मेरी क्यो फटेगी मैंने कोई गलती थोडी ना की है"।

टी.टी. वह थोडी ना सुनेगा कि गलती आप की है या कि उसकी वह तो टिकट देखेगा। टिकट जिसके पास होगा वह उस शीट पर बैठेगा। विना टिकट वाला ट्रेन के नीचे जायेगा। सुशान्त निरुत्तर हो दीपा का मुँह ताकने लगा। मेरा कहा मानो अभी भी समय है उसे वहाँ बैठने दो बच जाओगे नही तो खाँमखाँ मुसीबत में फँस जाओगे।

– मैं उनसे से नही हूँ कि वह कुछ भी करेगी और मैं चुपचाप खडा देखता रहूँगा। मैं उसे नग्गा कर दूँगा। तुम लोग की वजह से ही वह इतनी मन बढ़ हो गयी है। नही तो तुम्हारी तरह वह भी आकर अपनी शीट पर चुप चाप बैठ जाती। इस तरह दादागीरी नही दिखाती। मै ऐसा हरगिज ना करुँगा।

– "अच्छा तो ठीक हैं बैठे रहो, आती होगी टी.टी. को लेकर। इतने मे अर्चना आती दिखायी दी। लो आय भी गयी"। सुशान्त डरा सहमा सा अपनी फटी आँखोंसे हम तरफ देखने लगा जिधर के अर्चना आयी थी यह सोचकर कि शायद उसके पिछे टी.टी. भी आता होगा।

– क्यूँ क्या हुआ मुँह क्यो लटका है टी.टी. मिला कि नही अर्चना को उदास आतादेख दीपा ने पूछा।

– नही मिला। मायूस होकर अर्चना ने कहा–लगता है साले आज वे भी छुट्टी पर है। दो चार डिब्बों में ढूँढा लेकिन कही नही मिले।

– सुशान्त ने राहत की साँस ली उसकी बाते सुनकर और मुस्कराकर अर्चना को देखने लगा, मानो वह उसे चिढ़ा रहा हो।

– ज्यादा खुश मत होओ। अगला स्टेशन आने ही वाला है। गाडी रुकते ही मै टी.टी. को ढूँढकर जरुर ले आऊँगी और तुम्हे यहाँ से भगा कर ही दम लूँगी।

– "हाँ ठीक है ठीक है तब तक तो बैठ जा"।

– नही जबतक यह यहाँ रहेगा तब तक मै शीट पर नही बैठ सकती।

– अरे कब तक खडी रहेगी। लखनऊ तो अभी बहुत दूर है। टी.टी. नही मिला तो...। बैठ जिद्द छोड।

– नही इसे मै ऐसे नही छोड सकती अच्छे से सबक सिखा कर ही रहूँगी ताकि अगली बार किसी लडकी से पंगा लेने से पहले दस बार सोचे।

– मैं नही, लडकी दस बार सोचेगी, मुझसे पंगा लेने से पहले"।

– "अच्छा। मै तुझे कच्चा चबाऊँगी, बस एक बार टी.टी. को मिल जाने दे। सुशान्त को देख दाँत पीसते हुए अर्चना ने कहा।

– कैसे आप कहाँ तक जायेंगे"?

– “जहाँ तक यह ट्रेन जायेगी”।

– “हाँ”। विमला आश्चर्य से अर्चना का मूँह ताकने लगी। यह क्या जबाब हुआ। ट्रेन तो लखनऊ तक जायेगी।

– हाँ तो मै भी लखनऊ तक जाऊँगा।

– फिर तो मर गयी तू आज। अर्चना को देख विमला ने कहा–आज तुझे तेरी मनचाही शीट मिलने से रही। आजा अब सारे गिले शिकवे भूल कर बैठ जा।

– नही बैठूँगी लेकर रहूँगी। तभी ट्रेन के स्पीड धीरे–धीरे कम होने लगी। लगता है स्टेशन आ गया मै जाकर पहले टी.टी. को ढूँढती हूँ। कहती हुई अर्चना गेट की तरफ भागी।

– “ये दिमाक से खसकेली है या फिर जान बूझकर ऐसा दिखाने के लिए नाटक रह रही है ताकि लोग इसे देख कर डरें”। अर्चना के जाते ही सुशान्त ने सामने बैठी उसकी सहेलियों से कहा।

– नही यह बचपन से ही ऐसी ही है। जिद् पर आ गयी तो, चाहे दुनियाँ इधरसे उधर हो जाये यह कुछ सुनने वाली नही है।”

अब तक स्टेशन आ चुका था। अर्चना ट्रेन से नीचे उतर, टी.टी. को खोजने लगी थी। उसने प्लेटफार्म पर टी.टी. की तलाश में ईधर–उधर देखा, इस उम्मीद से कि शायद कोई टी.टी. नजर आ जाये लेकिन उसे एक भी टी. टी. नजर ना आया ना तो ट्रेन से नीचे उतरत औरना ही ट्रेनपर चढते और ना ही कोई प्लेटफार्म वर इधर–उधर घूमता नजर आया। हद हो गयी यार आज जब जरुरत है तो कोई नजर नही आ रहा है जब जरुरत नही रहती थी तो अनगिनत आँवारा कुत्तो की तरह इधर–उधर घूमते नजर आ जाते थे। थोडी देर तक वह उम्मीद बनाये इधर–उधर देखती रही कि शायद

कोई नजर आ जाये लेकिन सब बेकार टी.टी. तो क्या सी.आर. पी.एफ. का भी, एक भी जबान उसे कही ना दिखा। नही तो झुण्ड के झुण्ड इधर–उधर घुमते नजर आ जाते थे। आज पता नही सब के सब एक साथ कहाँ मर गये। अर्चना प्लेटफार्म पर खडी मन ही मन सोचती और भगवान से प्रार्थना करती रही कि हे भगवान कोई तो दिख जाये जिससे मैं मदद माँग सकूँ। खाली हाथ गयी ले वह खडूस साला मुझपर हँसेगा कि बडे तैश मे गयी थी टी.टी. को बुलाने खाली हाथ वापस आ गयी। तभी ट्रेन ने एक जोरदार शीटी बजा धीरे–धीरे पटरी पर आगे बढ़ने लगी। लो अब तो ट्रेन भी चल पडी लेकिन कोई नजर नही आया। अर्चना दौडकर ट्रेनपर चढ गयी और बोगी का हैण्डल पकड पिछे छुटते, प्लेटफार्म को तब तक देखती रही जबतक प्लेटफार्म उसकी आँखो से ओझल नही हो गया।

– अरे विमला देख तो कहाँ गयी वह मराठन अभी तक वापस नही आयी कही स्टेशन पर ही तो नही छूट गयी"।

"अच्छा तो वह मराठन है तभी तो उसके टेम्पो इतने हाई है"। दीपा की बात सुन सुशान्त ने मन ही मन सोचा।

आप थोडा देख कर आइये ना प्लीज कही वह स्टेशन पर ही छूट तो नही गयी। मै ही जाकर देखती लेकिन मुझे चलती ट्रेन मे गेट पर जाने से डर लगता है कही मैं गेट से बाहर ना गिर जाऊँ।

मैं देख कर आऊँ और उस मराठन को जिसने मेरा टिकट फाड कर फेंक दिया हरगिज नही। आप की सहेली है आप ही जाकर देखकर आओ।

– "बडे बत्तमीज है। एक लडकी मदद माँग रही है और आप हो कि कुछ सुुन ही नही रहे हो।

– "ओय मैडम यह बात आपको अपनी सहेली को समझाना चाहिए था जिसने मेरी टिकट फाडी और ट्रेन से बाहर फेकने की धमकी दी"। तभी अर्चना मुँह लटकाये आती

दिखायी दी–"लो आ गयी वह भी खाली हाथ"। सुशान्त ने अर्चना को देख मुस्कराकर कहा।

– क्या हुआ, टी.टी. मिला पास आते ही विमला ने कहा।

– "हाँ मिला" अर्चना ने झल्लाकर सुशान्त को घुरते हुए कहा।

– "चल छोट टी.टी. सी.टी. को, आजा इधर बैठ जा, वह अपनी शीट छोडने वाला नही है तेरे जाने के बाद हम लोगो ने उसे बहुत समझाया लेकिन ये टस् से मस् ना हुआ।

– लातो के थूत बातो से कहाँ मानेगें। ये समझाने से नही मानेगा इसे अब मुझे अपना असली रुप दिखाना पडेगा। हे मिस्टर तुम जाने हो यहाँ से कि मैं अपनी शर्ट फाडकर चिल्लाऊँ जोर जोर से कि तुमने मेरा रेप करने को कोशिश की है। कहती हुई अर्चना दोनो हाथो से अपनी शर्ट पकड सुशान्त के सामने आकर खडी हो गयी।

एक क्षण के लिए सुशान्त सकते मे आ गया उसका रौद्र रुप देखकर, हवा मे लहराते खुले बाल, लाल–लाल आँखे, क्रोध से तम–तमाया चेहरा वह सुशान्त को ऐसे घूर रही थी कि जैसे उसे अभी खा जायेगी।

– जाते हो कि फाड़ूँ। अर्चना चीखी।

सुशान्त डर कर उठना चाहा लेकिन अगले ही पल उसका पुरुसत्व जाग गया। वह उठकर खडा हुआ ही था कि वापिस वही जम–जमाकर बैठ गया।

– "तो तुम नही जाने वाले"। जबाब में सुशान्त ने उसे देखकर ना मे सिर हिला दिया।" देखो मे आखीरी बार तुम्हे समझा रही हूँ। चुपचाप यहाँ से चले जाओ नही खामखाँ मुसीबत मे फँस जाओगे"। अर्चना ने एक बार फिर सुशान्त को समझाने की असफल कोशिश की। "बहुत सारे ब्न्त्ण्च्ण्थ्ण वो ट्रेन के

अन्दर घूम रहे है। मै अभी अपनी शर्ट फाडकर जोर जोर से चिल्लाऊँगी फिर आगे क्या होगा तुम खुद ही सोच लो जेल तो जाओगे ही साथ में रेप का केश लगेगा सो अलग फाड़ू.........।

सुशान्त निरुत्तर हो उसे आँखे फाड–फाड कर देखने लगा उसकी समझ मे नही आ रहा था कि वह वहाँ से जाये या फिर आने वह क्या करनेवाली है उसका इन्तजार करे। उसे उसके पागल पर पर तरस भी आ रहा था। आखिर उसे इस शीट पर बैठकर ऐसा क्या मिलने वाला था जो वह इस पर बैठने के लिए इतनी जिद् कर रही थी।

– “जा ना। ऐसे क्या देख रहा है। कभी लडकी नही देखी क्या?

– नही देखी तो लेकिन तेरी जैसी नही। शीट के नीचे से अपना बैग बाहर निकालते हुए सुशान्त ने कहा। “जा जाकर पहले अपनी दवा करवा, किसी अच्छे डाक्टर को दिखाकर, नही तो पूरी ट्रेन पागल हो जायेगी, लखन्न्य आते–आते”।

– “कोई जरुरत नही है दवा मिल गयी मुझे”। सुशान्त की शीटपर बैठते हुए अर्चना ने मुस्करा कर कहा। “वाह कितनी मस्त हवा लग रही है। आखिर मे मैंने यह शीट झीन ही ली”।

– “हाँ, लखनऊ पहुँचकर।

– क्या? लखनऊ आ गया। अर्चना ने चौंक कर पूछा

– “आ नही गया आनेवाला है।”

– तभी तो कहूँ इतनी जल्दी कैसे आ गया।

– तूने यह अच्छा नही किया उसे भगा कर, उसका टिकट भी फाड दिया और उसे उसकी शीट से भी भगा दिया। रुम से बैठने के लिए उसे अपनी ही शीट दे देती।

– “जाने दो बहुत पापड दिलवाया उसने, इस शीट के लिए। चल पत्ते निकला दो–दो हाथ खेल लेते है।”

– हाँ यह ठीक रहेगा। बिमला पत्ते तो तेरे पास थे निकाल।

– लेकिन एक सर्त है जो जितेगा रास्ते का चाय पानी का पैसा वह भरेगा। बैग से ताश के पत्ते को बाहर निकालते हुए विमला ने कहा।

– “हाँ मंजूर है” सबने एक साथ कहा और शीटो के बीच सूटकेश रख आमने सामने बैठ गयी। अभी चाल बिछ ही रही थी कि इतने में टी.टी. टिकट–टिकट कटता हुआ वहाँ आ गया।

– “अब लो ले, जब जरुरत थी तो ढूँढते–ढूँढते थक गयी, कोई मिला नही अब जब जरुरत नही है तो पता नही कहाँ की टिकट टिकट कटता हुआ आ धमका। “चलो भाई टिकट दिखाओ”। रिर्जेवेशन शीट से बर्थ नं. मिलान करते हुए उसने अर्चना और उसकी सहेलियो से कहा–टिकट है आप लोगो के पास।

– हाँ है ना।

– दिखाइये।

– “यह लो” अर्चना को छोड बाकी सबने अपना अपना टिकट टी.टी. के हाथ मे पकडा दिया। पैंतीस छत्तीस, सैंतीस अठतीस और मैडम जी आप का। टिकट मे शीट का मिलान करते हुए उसने अर्चना से पूछा–

– “उन्तालीस”।

– “हॉ वह तो मालूम टिकट तो दिखाइये।”

– “वह तो हवा मे उड गया”।

– “कैसे”?

– शीट ढूँढते के लिए पर्श से निकाला ही था कि हवा का एक झोंका आया और उसे उडाकर ट्रेन के बाहर चला गया”।

– फिर दूसरा बनवा लिजिए”।

– “पैसे नही है फ्री मे बनाने का है तो बना दिजिए।

– “फ्री मे तो कुछ ना बनता मैडम”।

– नही बनता तो मत बनाइये। रिर्जवेशन शीट मे मेरा नाम अर्चना लिखा होगा मिला लिजिए और चलते बनिये यहाँ से

– “ठीक है फिर आई कार्ड दिखाओ”।

– “हाँ ठीक है यह लो” फर्श आई कार्ड निकाल टी.टी. के हाथ मे पकडाते हुए अर्चंना ने कहा। “ध्यान से देखना। कुछ गलत दिखे तो कुछ बोलना मत नही तो मेरी जगह तुम जेल जाओगे आई कार्ड देखते ही टी.टी. बुरी तरह चौका। वह आश्चर्य ने कभी आई कार्ड देखता तो कभी अर्चना का चेहरा।

– “इतने चौंक क्यो रहे हो वह मेरा ही है”।

– “लगता तो नही” माथे का पसीना पोछते हुए उसने कहा“ लेकिन आप कह रही हो तो मान लेते है कि आपका ही है। यह तो अपना आई कार्ड। आई कार्ड वापस देते हुए उसने कहा“ आँखो पर यकीन नही होता कि आप भी......। चलो चलता हुँ माफम करना मैडम परखने मे गलती हो गयी।

– “हाँ–ठीक है ठीक है” और सुनो जैसे ही टी.टी. चलने को हुआ अर्चना ने कहा“ आगे एक लडका विना टिकट अभी यह जे गया है उसे पकडकर जेल की हवा जरुर खिलाना। मुझे तो कोई आतंकवादी लगता है वह।”

– “अच्छा”। हरबा–हथियार भी लिया है क्या सह।

– “लिखा होना”। मैने उसका बैग तो देखा नही”।

– अभी देखता हूँ ससुरे को कहता हुआ टी.टी. आगे बढ गया।

– ऐसा क्या दिखा दिया तूने उसे उसके पसीने छूटने लगे।” टी.टी. के जाते ही दिपा ने अर्चना से पूछा।

– “अरे कुछ नही कुश्ती मे जो सर्टीफिकेट मिला था वही दिखा दिया उसे”।

– तभी तो बेचारा बार–बार तुझे देखा ही रहा था सोच रहा होगा कि इतनी नाजुक कली, कुश्ती मे मेडल कैसे जीत गयी।

– नही मुझे तो इसके उपर डाउट है वह कुश्ती का मेडल नही कुछ और ही होगा। देख बाही रही थी कि इस ठण्डी के मौसम मे भी उसे कैसे पसीने छूट रहे थे। उसे देखते ही वह कैसे चुपचाप दुम दबाकर भागा। हा मुझे भी दिख वह दिखा वह क्या है।

– अरे छोड ना तू उसके बारे मे सोच, इसका क्या होगा जिसका टिकट मैन फाडकर फेकं दिया था। वह तो बेचारा आज गया काम से। चल–चलकर उसके जले पर नमक छिडककर आते हैं।

– “तू है बडी हरामखोर। तेरे पास कुछ दया माया है कि नही एक जो उसका टिकट फाडकर फेंक दिया और उपर से अब जा रही है उसके जले पर नमक छिडकने”।

– “अरे चलना लडके लोगो को परेशान करने मे बडा मजा आता है।

– तू जा हम लोग नही जाने वाली।

– मै तो जाऊँगी। क्योंकि, बहुत परेशान करने के बाद उसने मुझे वह शीट दी है कहती हुई अर्चना अपनी शीट से उठ सुशान्त की तरफ बढ़ गयी।

टी.टी. टिकट चेक करते–करते सुशान्त के पास पहुँचा। हाँ लाइये भाई टिकट दिखाइये"।

– "काहे का टिकट, शीट पर तो बैठा नही हूँ। गेट पर बैठा हूँ फिर क्यूँ टिकट दिखाऊँ।

– "गेट पर बैठो, चाहे लैट्रिन में। ट्रेनपर चढे हो तो टिकट तो दिखाना ही पडेगा, नही तो जेल जाओगे। दण्ड भरना पडेगा सो अलग। चलो टिकट दिखाओ।

– "नही है एक लडकी ने फाडकर फेंक दिया"।

– देखो बहाने मत बनाओ, मैं यह अब सुनने वाला नही हूँ। अभी एक लड़की ने भी यही कहानी सुनाई कि उसका टिकट हवा मे उडकर ट्रेन ये बाहर चला गया। अब आप कह रहे हो कि आपकी शीट हथियाने के लिए उस लडकी ने आप का टिकट फाड कर फेंक दिया। ऐसा ही है ना।

– हाँ। आपको कैसे मालूम"।

– उसी लडकी ने बताया, जिसने तुम्हारा टिकट फाडकर फेंक दिया था कि तुम्हारे पास टिकट नही है और तुम बिन टिकट के उसकी शीट पर कब्जा जमाये बैठे थे। बडी मुश्किल से उसने तुम्हे अपनी शीट से भगाया"।

– अच्छा। ऐसा कहा उसने। मेरा टिकट भी फाडा उल्टे मेरी शिकायत भी की। यह तो वही हुआ कि उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे"।

– "इतना ही नही उसने तुम्हे आतंकवादी तक कह डाला।

– उसकी ये हिम्मत। उसने मुझे आतंक वादी कहा उसे तो मै देख लूँगा।

– उसे देखना जब देखना पहले तुम मुझे अपना टिकट दिखाओ।

– "अरे कहा ना सर मेरे पास टिकट था लेकिन उस सिरफिरी लडकी ने फाडकर फेंक दिया"।

– देखो भाई बहुत हो गया अब। सुबह से मै तुम जैसे लोगो के बहाने सुन–सुनकर पक चुका हूँ। अब मैं और कुछ सुनना नही चाहता। टिकट दिखाइये नही तो जेल की हवा खाने के लिए तैयार रहिए।

– "रिर्जवेशन चार्ट से मेरा मिलान कर लिजिए। शीट नं. चालीस के सामने सुशान्त ठाकुर लिखा होगा।"

– नही सर मै सच कर रहा हूँ। मै कोई बहाना नही बना रहा हूँ। दिल्ली से एक लडकी अपनी कुछ सहेलियों के साथ ट्रेन मे चढी और अपनी शीट ढूँएती हुई मेरे पास आयी फिर उसने कहा इस शीट से उठो यह शीट मेरी है। मैने कहा नही मेरी है मेरे पास बकायदा इस शीट का टिकट है तो उसने कहा दिखाओ और जब मैंने अपना टिकट उसे देखने के लिए दिया इसने फाडकर फेंक दिया और बोली अब उठो अब तो आपके पास टिकट भी नही है नही तो मै टी.टी. को बुलाकर लाऊँगी और तुम्हे बिना टिकट के जुर्म मे जेल भिजवा दूँगी। इसपर भी जब मै अपनी शीट से नही उठा तो वह मुझे अपनी शर्ट फाडकर धमकी देने लगी कि जाओ नही तो मै जोर–जोर से चिल्लाऊँगी कि तुमने मेरे साथ जोर जबर दस्ती की है। फिर मजबूरन मुझे वहाँ से आना पडा।

– वाहा बडी अच्छी कहानी बना लेते हो यार। देखने मे मासूमसे दिखते हो लेकिन कहानी बनाने मे बडे शातीर हो। लेकिन ने ठीक ही कहा था कि तुम बडी अच्छी कहानियाँ बना लेते है। चलो पाँस हजार निकालो"।

– पाँच हजार। सुशान्त के नीचे की जमीन सटक गयी। उसे चक्कर सा आ गया पाँच हजार का नाम सुनकर। पाँच हजार क्यूँ सर।

– अरे भाई हजार रुपये टिकट के और चार हजार फाइन।

– टिकट के हजार रुपये क्यों? मै दिल्ली से ही तो आ रहा हूँ।

– भाई मुझे क्या मालूम कि आप दिल्ली से आ रहे हो या कि राजस्थान से। फाइन तो जहाँ से ट्रेन बनकर निकली है वहाँ से भरना पडेगा ना।

– "सर ये कहाँ का नियम है। बैठूँ दिल्ली से और टिकट करवाऊँ राजस्थान से"।

– ये इन्डिया का नियम है। विना टिकट पकडे गये तो जहाँ से ट्रेन छूटती है वहाँ से लेकर जहाँ तक जाती है वहाँ तक का फाइन भरना पडता है इसलिए तो ट्रेनो मे जगह जगह लिखा रहता है कि बिना टिकट यात्रा करना कानून अपराधा है, पकडे जाने पर फाइन अथवा जेल हो सकती है। अब आप डिसाइड कर लो फाइन भरोगो या फिर जेल जाओगे।

– सर यह तो बडी ना इन्साफी हुई, मेरे पास टिकट था आप चाहे तो।

देखिए जनाब लिखे से कुछ नहीं होता। आपके पास टिकट नहीं है तो आप बिना टिकट हुए। एक काम करीये थोड़ा बहुत कम कर देता हूँ। देकर रफा–दफा किजिए नहीं तो खामखी जेल जायेंगे तो मुसीबत बढ़ जायेगी।

चलिए लाइये पाँच की जगह चार दे दिजिए। इतना कह टी.सी. टिकट फाडने लगा।

“अरे सर सुनिये तो सही अभी टिकट मत फाड़िये।”

“निकालो–निकालो मेरे पास और कुछ सुनने का समय नहीं है। अभी आगे के बहुत सारे डिब्बे चेक करने हैं। तुम्हारे जैसे पता नहीं कितने सुरमा भोपाली बिना टिकट बैठे होगें। चलो जल्दी करो चार हजार निकालो। टी. सी. नीचे सर झुकाये टिकट फाडते बड़–बड़ा रहा था और सुशान्त अपने बैग में अपना रेल्वे पास ढूँढ रहा था।” “अरे, कहाँ छुपा के रखे हो यार जो इतनी देर से ढूँढ रहे हो अभी तक मिला नहीं।”

“यह लिजिए मिल गया।” रेलवे पास टी.सी. की तरफ बढ़ाते हुए सुशान्त ने कहा।

“यह क्या है?”

“देख लिजिए।”

“एक से एक सुरमा भोपाली पड़े है। अब क्या करूँ इसका अँचार ड़ालू।” पास उलट–पलटकर देखते हुए। टी.सी. ने कहा–“पहले नहीं बता सकते थे कि तुम सरकारी दामाद हो। खामखाँ चार हजार पिलवा दिये। सुबह से अभी अठन्नी से भेंट नहीं हुई है ऊपर से तुमने भी टिकट फड़वा कर चार हजार पिलवा दिया।”

“मैं तो आप को मना ही कर रहा था लेकिन आप थे कि टिकट फाड़ने के लिए उतावले हो रहे थे। अब इसमें मेरी क्या गलती है।”

“सब आप की ही गलती है पास था तो बोलना चाहिए था कि पास है, जब मैं टिकट बना रहा था तो चुपचाप बैठे तमाशा देख रहे थे। अब जब टिकट बन गया तो पास पकड़ा रहे हो, चलो आधा पैसा भरो आधा मैं भर दूँगा।”

“सर मेरे पास पैसे नहीं है। मैं एक भी पैसा देनेवाला नहीं हूँ।”

“अच्छा! दिल तो यही कह रहा है कि तुम्हारा यह पास फाड़कर फेंक दूँ। जैसे उस लड़की ने तुम्हारा टिकट फाड़कर फेंक दिया था।”

“अरे ऐसा मत करीये सर। बड़ी मशक्कत के बाद पास बना है। घन्टो लाईन में लगने के बाद। आप फाड़कर फेंक देगें तो दुबारा बन भी नहीं पायेगा।”

“हाँ तो लाओ दौ सौ रूपये दो। बाकी हम आगे जाकर दूसरे किसी से वसुलकर आर्जेस्ट कर लेंगे।”

तभी अर्चना वहाँ आती दिखायी दी। “सर वो देखो वो लड़की आ रही है उसी ने मेरा टिकट फाड़ा था। उसी से ले लिजिए जितना चाहिए हजार पाँच सौ।”

“उससे ले लूँ।” टी.सी. ने अर्चना की तरफ देखते हुए बोला–“जानते हो वह कौन है?”

“नहीं।”

जानोगे तो पैर के नीचे की जमीन सरक जायेगी।

“फिर तो बता ही दो कौन है।”

“फौज में कैप्टन है।”

“अच्छा, ये। तुम पगला गये हो, ऐसे लोग यदि फौज में कैप्टन बनने लगेगे फिर तो हो गया .... अपनी फौज का।” सुशान्त ने अर्चना की तरफ देखते हुए पूछा जो लडखड़ाती गिती पड़ती उन्ही की तरफ आ रही थी। “ये किस ऐंगल से लगती है कि फौज में होगी देख नहीं रहे हो कैसे लड़खड़ा रही है। ठीक से तो चला नहीं जा रहा है इससे। चली है फौजी बनने।”

“यह लो अपना पास पकड़ो, तुमसे बहस बाजी करके क्या फायदा?”

चल कोई बकरा ढूँढू नहीं तो अपनी जेब से भरना पड़ेगा। वह फौज में हो या ना हो अपने को क्या? चलता हूँ। जरा सम्भल कर रहना उससे।

बड़ी ऊँची चीज है नहीं तो खामखाँ मुसीबत में फँस जाओगे। कहता हुआ टी.सी. अगले डिब्बे की तरफ बढ़ गया।

“जभी मैं बोल रहा था तो पैसे की सनक में कुछ सुना नहीं।”

“अभी बोल रहा है कि बड़ी ऊँची चीज है जरा सम्भल के। लगता है उसने टी.सी. को भी नहीं छोड़ा।”

“क्यों अच्छे पिलाई हुई कि सौ–दौ सो लेकर छोड़ दिया उसने।” पास आते ही अर्चना ने मुस्कराते हुए पूछा सुशान्त से।

“तू तो यही चाहती थी ना कि अच्छे से पिलाई हो मेरी। अठ्न्नी नहीं दी मैंने उसे।”

“अच्छा, थोड़ा लेट हो गयी पहुँचने में नहीं तो बराब्बर पिलवाती। मेरे पहुँचने से पहले ही वह भाग गया। वापिस बुलाऊँ क्या अगर पिलवाने का ज्यादा शौक हो तो। चलो छोड़ो जाने दो अभी तो जिन्दगी बहुत पड़ी है फिर कभी पिलवा लेना। चलो उठ़ो चलकर अपनी सीट पर बैठ़ो।

“नहीं, मैं यही ठीक हूँ।”

देखो मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूँ कि तुम्हे मनाऊँगी। चुपचाप उठो और चलकर अपनी सीटपर बैठो। ज्यादा भाव मत खाओ, चलो।

“नहीं जाऊँगा, कोई जबरदस्ती है क्या? मैं यही ठीक हूँ।

“हाँ जबरजस्ती है। यह जगह बैठने के लिए नही है। लोगों के आने–जाने के लिए है। तुम ऐसे यहाँ नहीं बैठ सकते टाँग फैलाकर।”

अजीब हो यार। तुम्हारी प्राब्लम क्या है? पहले सीट से भगाया अब यहाँ भी बैठने नहीं दे रही है।”

“अरे ये कोई बैठने की जगह है किसी को बाथरूम जाना होगा तो वह कैसे जायेगा, तुम्हे लाँघकर। बोल रही हूँ कि चलकर सीटपर बैठो तो समझ में नही आ रहा है क्या? बात का बतंगड बना रहे हो।”

“मैं बात का बतंगड बना रहा हूँ कि तुम।” पहले सीट से भगाया, शान्ती से यहाँ बैठा था तो यहाँ आ गयी।

“देखो ज्यादा बहस बाजी मत करो, चुपचाप यहाँ से उठ़ो नहीं तो एक लात मारूँगी ट्रेन से नीचे जा गिरोगे।” अभी वह इतना ही कह पायी थी कि ट्रेन में अचानक ब्रेक लगने से वह लड़खड़ाती हुई सुशान्त के ऊपर जा गिरी।

“लो, खुद तो सम्भला नहीं जा रहा है चली थी मुझे ट्रेन से बाहर फेकने, अब उठेगी भी कि लेटे–लेटे चुम्मा देती रहेगी मुझे।”

“नहीं उठ पा रही हूँ।” लेटे–लेटे उठ़ने की कोशिश करते हुए उसने कहा।

“कहीं डण्ठल जैसी कमर तेरी टूट तो नहीं गयी।”

“प्लीज मजाक मत करो, सचमुच मैं उठ नहीं पा रही हूँ, लगता है कमर में मोच आ गयी।” कराहते हुए कमर पकड़कर, उठ़ने की असफल कोशिश करते हुए उसने कहा।

“सुना है कि तू फौज में कैप्टन है।”

“किसने कहा?” सुशान्त का चेहरा देखते हुए अर्चना ने पूछा।

वह टी.सी. बोल रहा था।

गलत बोल रहा था।

“हाँ वही तो मैं भी सोचू की तुम जैसी नाजूक कली यदि फौज में जाने लगी फिर तो फौज का हो गया बन्टाधार।”

“क्यों हम जैसी क्यों नहीं जा सकती?”

इसलिए कि फौज देश की रक्षा करेगा कि तुम्हारी।

हमें अपनी रक्षा करनी आती है। कमर में मोच नहीं आयी होती तो अब तक तू ट्रेन के नीचे होता।

“अच्छा।”

“हाँ। अब चुपचाप मुझे उठ़ा और ले चलकर मुझ मेरी सीट तक छोड़।”

“सीट तक छोड़ना पड़ेगा।” अर्चना को लेकर खड़े होते हुए सुशान्त ने कहा।

“और नहीं तो क्या?”

“तू नहीं चल पायेगी।”

अरे अकल के दुश्मन जब मुझसे खड़ा नहीं हुए जा रहा है तो चल कैसे पाऊँगी।”

“अच्छा ठीक है मैं उठाकर ले चलता हूँ लेकिन कोई केश–बेस मत ठोकना। नहीं तो रेप का केस ठोक दो।” अर्चना को गोद में उठ़ाते हुए सुशान्त ने कहा–“बडी वजनदार हो यार। देखने में डण्डल जैसी दिखती हो वजन में किसी......।” कहते कहते सुशान्त रूक गया।

“किसी क्या?” आगे बोलो।

“कुछ नहीं।” चेहरे पर हल्की मुस्कार बिखेरते हुए सुशान्त ने कहा।

“वैसे मैं एक बात कहूँ?”

“हाँ कहो।”

मुझे तो बड़ा मजा आ रहा है तुम्हारी गोद में। कैसे तुमने, एक बच्ची की तरह अपनी गोद में उठा लिया मुझे।

“अच्छा।” बच्ची नहीं भैस बोल, भैस। मेरा कन्धा उखड़ा जा रहा है तेरी वजन से।” अर्चना को देख मन–ही–मन सोचा सुशान्त ने। अब तक वह अर्चना को गोद में लिए–लिए उसकी सीट तक पहुँच चुका था। अर्चना को सुशान्त की गोद में देख उसकी सारी सहेलियाँ अपनी–अपनी सीट छोड़ उठ़ खड़ी हुई और आश्चर्य से उसे देखने लगी।

“ऐसी क्या घुट्टी तूने पिला दी उसे, कि सीधा फर्श से उसकी गोद में आ गयी।” सबने एक साथ अर्चना ने पूछा।

“गयी थी मुझे ट्रेन से नीचे फेकने, खुद नीचे जाते–जाते बची। लो सम्भालो इन्हें। बर्थ पर लिटाते हुए सुशान्त ने कहा–“मोच आ गयी है महारानी जी की कमर में।”

“सच में मोच आ गयी है याकि तू नौटकी कर रही है।” दीपा ने आँखों के इशारे से पूछा। जबाब में अर्चना अपनी कमर पकड़ कराहने लगी। “आह, मेरी कमर।”

“किसी के पास मूव है।”

“हाँ है ना।” कहते हुए दीपा ने अपनी बैग से मूव निकाल सुशान्त के हाथ में पकड़ा दिया–“यह लो।”

“अरे मैं क्या करूँ मुझे क्यों पकड़ा रही हो। आप लोग उसकी सहेली हो, आप लगाओ।”

“देखो, हम लोगों में से किसी को भी मूव लगानी नहीं आती।” दीपा अपनी सहेलियों की तरफ देख आँख मारती हुई बोली–आप ही लगा दिजिए।

इसमें कौन सी बड़ी बात है। हाथ में मूव लो जहाँ पर दर्द है वहाँ लगाकर मालिश कर दो।

“हाँ तो आप कर दो ना।”

“अरे मुझे भी तो नहीं आता और मैं उसकी कमर मे हाथ कैसे डालूँगा।”

“जैसे हम ड़ालती वैसे ड़ाल दो।”

“ऊहा, माँ मेरी कमर।” अर्चना जोर से कराही।

“देखो उसे बहुत दर्द हो रहा है। प्लीज जल्दी करीये। आप लड़का हो, वह लड़की ऐसा मत सोचिए। उसकी मद्द किजिए, नहीं तो वह दर्द से मर जायेगी।”

“हाँ–हाँ यह ठीक कह रही है। जल्दी किजिए। सबने एक साथ कहा। देख नहीं रहे हो, मार दर्द के रो रही है।

सुशान्त ने अर्चना के चेहरे की तरफ देख वह आँखे बन्द किये सचमुच रो रही थी। "ज्यादा दर्द है" झुककर सुशान्त ने पूछा। जबाब में अर्चना ने अपना सिर हाँ में मिला दिया। अच्छा एक काम करिये आप पेट के बल पीठ़ ऊपर कर लेट जाईये। सुशान्त का इतना कहना था कि वह पेट के बल पीठ़ ऊपर कर झट से लेट गयी–लो लेट गयी अब मालिश करो।

बोलिए कहाँ दर्द है?

उसने कमर के निचले हिस्से की तरफ इशारा किया। सुशान्त आश्चर्य से अर्चना की सहेलियों का मुँह ताकने लगा।

"क्या हुआ ऐसे क्यों देख रहे हो?"

इसका तो वो भी दर्द कर रहा है।

"वो क्या?"

"अरे वही उसका पीछे का।"

"हाँ तो क्या हुआ वहाँ भी लगा दो उसी को तो कमर बोलते है।"

"मैं कैसे लगाऊँ?"

"अरे लगा दो अपनी बीबी समझकर।"

"अपनी बीबी कैसे समझ लूँ अभी तो मेरी शादी भी नहीं हुई है"।

"हाँ तो हो जायेगी।"

"क्या?" सुशान्त आश्चर्य से दीपा का मुँह ताकने लगा।

मेरे कहने का मतलब कि अभी से सीख कर रखो नहीं तो शादी होगी तो क्या करोगे? मान लो यह तुम्हारी बीबी है और तुम उसकी कमर में मूव लगा रहे हो चलो जल्दी करो, उसे बहुत दर्द हो रहा है।

"ऊह! मम्मी.......... दीपा की बात सुनकर अर्चना एक बार फिर जोर से कराही।" सुशान्त सोच में पड गया कि क्या करे, मूव लगाये कि ना लगाये। ज्यादा सोचो मत, बस यह समझ लो कि तुम उसके डाक्टर हो और वह

तुम्हारी पेसेन्ट है, तुम उसका इलाज कर रहे हो। डॉक्टर उसके लिए भगवान होता है। सुशान्त ने एक नजर अर्चना पर डाली, जो आँखे बन्द किये अभी भी दर्द से कराह रही थी। फिर ना चाहते हुए भी, मूव हाथ में निकाल, मूव लगाने के लिए जैसे ही अपना हाथ अर्चना के कपड़ों के अन्दर डाला वह जोर चीखी उइई........माई। क्यो क्या हुआ, कहता हुआ सुशान्त ड़र कर अपना हाथ वापस खींच लिया।

"थोड़ा धीरे दबाइये ना मैं लड़की हूँ।"

"नौटंकी कही की किसी भी ऐंगल से तू लड़की नहीं लगती।" दीपा मन–ही–मन बुदबुदायी।

"अच्छा ठीक है धीरे–धीरे दबाता हूँ।" फिर कपड़े के अन्दर हाथ डाल सुशान्त धीरे–धीरे मालिस करने लगा और अर्चना के साथ–साथ बाकी उसकी अन्य सहेलियाँ उसे देख मन्द–मन्द मुस्कराने लगी।

"आप कहाँ तक जाओगे?" अपनी सीट पर बैठते हुए दीपा ने पूछा।

"लखनऊ तक।"

"ओह! फिर तो हमारी मंजिल एक है।"

"आप सब भी लखनऊ जा रही हो।"

"हाँ हम सब भी लखनऊ जा रही है।"

"किसी काम या से फिर यूँ ही घूमने टहलने।"

"हाँ हम सब पिकनिक मनाने जा रही है।" करवट बदल पीठ के बल लेटते हुए अर्चना ने कहा। अर्चना की बात सुन बाकी सब उसका मुँह ताकने लगी और मन–ही–मन सोचने लगी कि ये झूठ क्यों बोल रही है।"

अरे ये आप क्या कर रही है लेटे रहिए।

नहीं–नहीं पीट का दर्द अब काफी हद तक ठीक हो गया है लेकिन पैर की ऐंडी अभी भी दर्द कर रही है। थोडी मूव वहाँ भी लगा देगें प्लीज।

“हाँ–हाँ क्यों नही, लाइये वहाँ भी लगा देता हूँ।”

आप पहले सीट पर बैठ जाइये फिर लगाइये।

“लो जी बैठ गया।” सीट पर बैठते हुए सुशान्त ने कहा। “अब लिजिये लगाइए। अपना दोनो पाँव सुशान्त कि गोद में रखते हुए अर्चना ने कहा। इसके बाद सुशान्त मूव निकाल उसकी ऐंडी सहित पैर के पन्जे में मालिश करने लगा।

“वैसे आप लखनऊ क्यों जा रहे है।” अर्चना ने बात आगे बढ़ाते हुए सुशान्त से पूछा।

“मेडिकल की पढ़ाई करने।”

“क्या?” अर्चना चौंककर उठ बैठी और आश्चर्य से कभी सुशान्त तो कभी अपनी सहेलियों का मुँह ताकने लगी।

“आप डाक्टरी की पढ़ाई करने जा रहे हो।”

“हाँ, लेकिन आप मुझे ऐसे क्यूँ देख रही हो।”

“नहीं कुछ नहीं। तुम्हे एडमिशन मिल गया।”

“हाँ तभी तो पढ़ाई करने जा रहा हूँ।”

“अच्छा! कैसे मिला? घूस देकर।

“नहीं कैट पास कर। पूरे स्टेट में एकसौ सत्रहवीं रैंक है मेरी।

“अच्छा! लगता तो नहीं।”

अब हैं तो है आप को लगे चाहे ना लगे। तभी एक झटके के साथ ट्रेन की स्पीड धीमी हो गयी। लगता है लखनऊ आ गया।

“हाँ लगता तो है।” अर्चना अभी भी आश्चर्य से सुशान्त का मुँह ताक रही थी। उसे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था कि वह मेडिकल की पढ़ाई करेन जा रहा है।

“चल उठ लखनऊ आ गया। उसे ऐसे क्या देख रही है, तुझे क्या लगता है कि तू ही मेडिकल की पढ़ाई कर सकती है।”

“आप लोग भी मेडिकल की पढ़ाई कर रही हो आप ने बताया ही नहीं।”

कैसे बताती आप ने पूछा ही नहीं। वैसे भी बताकर क्या फायदा हमारी तो पढ़ाई पूरी होनेवाली है। अर्चना ने कहा।

वाह बड़ी अच्छी बात आप लोग डाक्टर बन गये। वैसे आप डाक्टरी की पढ़ाई कहाँ से कर रही है।

“एम्स कॉलेज दिल्ली से।”

“बहुत फेमस कालेज है।” सुनकर बड़ी खुशी हुई।

“मुझे भी।” अर्चना ने मुस्कराते हुए कहा।

कभी जरूरत पड़ी तो आप लोग मेरी मद्द करना।

“हाँ, हाँ श्योर। रात–बेरात कभी भी आप फोन करो हम तैयार रहेंगे मद्द को।

“आप अपना नम्बर दे दजिए।”

“अब अपना नम्बर बोलो मैं मैसेज कर देती हूँ।”

दोनो मोबाइल नम्बर एक दुसरे को दे ही रहे थे कि ट्रेन धीरे–धीरे रेगती हुई प्लैटफार्म पर आकर रूकी। सब नीचे उतरने के लिये अपना–अपना सामान समेटने लगे। सुशान्त ने भी अपना बैग सीट के नीचे से बाहर निकाल लिया लेकिन अर्चना लाख कोशिशो के बावजूद भी सीट के नीचे से अपना बैग नहीं निकाल पायी थी। वह हार–थककर सुशान्त का मुँह ताकने लगी।

“क्या हुआ नहीं निकल रहा है।”

“नहीं, लगता है कि कहीं फँस गया है।”

“हाँ मुझे भी लगता है। मुझे भगाने के चक्कर में जहाँ नहीं घुसाना चाहिए था मारे जोश के आपने वहाँ घुसा दिया।

“सॉरी पहिचानने में गलती हो गयी।”

ओ.के. कोई बात नहीं, हो जाता है कभी–कभी। हटो मैं देखता हूँ। फिर सुशान्त ने सीट थोड़ा ऊपर उठाकर झटके के साथ बैग बाहर खीच लिया–“यह तो निकल गया।”

“थँक्यू!” अपना बैग उठा अर्चा लँगड़ाते हुए आग बढ़ी।

“आप चल जाओगी कि उठाकर ले चलूँ।”

“मुझे नहीं, यह बैग उठा लेते तो अच्छा था।” सुशान्त की तरफ देख अर्चना ने मुस्करा कर कहा।

“अच्छा ठीक है, लाइये बैग मुझे दे दिजिए, आप धीरे–धीरे सम्भल कर चलिए।”

फिर वे ट्रेन से उतर, प्लैटफॉर्म से निकल स्टेशन के बाहर आ गये। बाहर मिलिट्री की दो कारें खड़ी आकर इन्तजार कर रही थी। स्टेशन के बाहर निकलते ही दो फौजी आगे बढ़कर उसका सामान उनके हाथ से ले गाडी में रखने लगे।

“आप का पिकनिक कितने दिनों का है।” सुशान्त ने अर्चना ने पूछा।

“एक हप्ते का।”

“उसके बाद।”

“वापिस दिल्ली पढ़ाई करने चली जाऊँगी।”

“वैसे यहाँ आप कहाँ रूकनेवाली है होटल में।”

“नहीं मिलिट्री छावनी में।”

“क्यों? वहाँ आपका कोई रहता है क्या?”

“हाँ मेरे डैड।”

“ओह! वो मिलिट्री में है।”

“हाँ! अब आप यहाँ से कहाँ जाओगे?”

अपने रिलेटिव के यहाँ आज रात रूकूँगा। कल मेडिकल कालेज शिफ्ट हो जाऊँगा।

“अच्छा अब मैं चलती हूँ। मद्द के लिए थैंक यू। हमारे रास्ते अलग है नहीं तो मैं आपको भी लिफ्ट दे देती।”

“अरे कोई बात नहीं मैं चला जाऊँगा।”

“चलो बाय।” कहती हुई अर्चना अपनी सहेलियों के साथ गाड़ी में जा बैठी। सुशान्त खड़ा वही देखता रहा।

“बाय।”

देखते–ही–देखते गाड़ी सुशान्त को पिछे छोड़ती दूर होती चली यगी। वह तब–तक उन्हे वहीं खड़े–खड़े देखता रहा जब तक कि वह उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गयी।

तुने उससे झूठ क्यों कहा कि तू पिकनिक मनाने आयी है। कालेज में वह तुझे देखेगा तो तेरे बारे में क्या सोचेगा। यही कि तू नम्बर एक की मक्कार है।

“नहीं मैं यह देखना चाहती थी कि उसके अन्दर मेरे लिए कुछ फिलिंग है कि नहीं।”

“तो क्या देखा?”

“बहुत फिलींग है। देखा नहीं कि बेचारा कैसे मुँह लटकाये हमें तब तक देखता रहा जब तक कि हम उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गयी। आग लगा दी है मैंने, देखो कब बुझती है। रही बात कालेज की तो कालेज मे मै। उसके लिए अनजान बन जाऊँगी। बोलूँगी कि हम तो कही मिले ही नहीं थे।

बड़ी हराम खोर है तू।

वह तो हैं। फिर सब एक साथ खिल–खिलाकर हँस पड़ी।